अक्षर

74

मूल्य-100 रु.

एक और पहलू

उपन्यास उमराव जान 'अदा' का असली रंग व शोखी फ़िल्म में नहीं मिलती । वह लखनऊ भी नहीं, जो मुस्लिम तहज़ीब और तमद्दुन की पहचान था, और न ही चाशनी में डूबी वह उर्दू ज़बान, जो इस उपन्यास के पन्नों पर मिर्ज़ा हादी रुसवा ने बिखेरी है । अनुवाद गुलशन नन्दा का है। पढ़ें, इसी उपन्यास का एक रोचक अंश -

मेरी तबीयत गाने-बजाने के बहुत ही मुनासिब पाई गई । आवाज भी पक्के गाने के लायक थी । सरगम साफ होने के बाद उस्ताद ने आस्ताई शुरू करा दी । उस्ताद जी बहुत उसूल से तालीम देते थे । हर एक राग का सुर-ब्यौरा ज़बानी याद कराया जाता था, और वही गले से निकलवाते थे । मजाल न थी, कोई सुर कोमल से अति कोमल, शुद्ध से अशुद्ध या तीव्र से तीव्रतर हो जाय। मेरी भी हुज्जतें करने की आदत थी । पहले तो उस्ताद जी, खुदा करे उनकी रूह शमिन्दा न हो, टाल दिया करते थे ।

एक दिन ख़ानम साहब के सामने मैं रामकली गा रही थी, धैवत शुद्ध लगा गई। उस्तादजी ने न टोका । ख़ानम साहब ने फिर वही कहलवाया । मैंने फिर उसी तरह कहा । उस्तादजी का मुँह देखने लगी । उन्होंने सिर झुका लिया । फिर तो ख़ानम ने उनको आड़े हाथों लिया ।

ख़ानम : 'उस्ताद जी ' यह क्या था? रामकली में उच्चार धैवत से है , और वही सुर ठीक नहीं। मैं आप से पूछती हूँ , धैवत कोमल है या शुद्ध?'

उस्ताद : 'कोमल'

ख़ानम : 'ओ छोकरी तूने क्या कहा था?'

मैं : 'शुद्ध'

ख़ानम : 'फिर आपने टोका क्यों नहीं?'

उस्ताद : 'कुछ मुझे ख्याल नहीं रहा।'

ख़ानम : 'वाह ख़्याल क्यों नहीं रहा । इसीलिए मैंने दोबारा कहलवाया । फिर भी आप मुँह में घुनघुनियाँ भरे बैठे रहे । आप इसी तरह छोकरियों को तालीम देते हैं? अभी किसी समझदार के सामने इसी तरह गाती, तो वह क्या मेरे जन्म में थूकता?

एक दिन ऐसा ही इत्तिफ़ाक हुआ, कि मैं सूहा गा रही हूँ। ख़ानम भी मौजूद हैं। मैंने उस्ताद जी से पूछा: 'गन्धार इसमें कोमल है या अति कोमल?'

उस्ताद जी : 'अति कोमल।'

ख़ानम : खाँ, साहब । माशाअल्ला, यह मेरे सामने?

उस्ताद : 'क्यों?'

ख़ानम : 'आप मुझी से पूछते हैं, क्यों? सूहा में गन्धार अति कोमल है? भला आप तो कहिए।'

उस्ताद : 'गन्धार कोमल लगा गये।'

ख़ानम : 'बस आप ही कायल होइए। खुद आप कोमल कहें और छोकरी को बहकाते हैं, या मुझे कहते हैं । साहब, मैं कुछ अताई नहीं । ख़ाक चाट के कहती हूँ, गले से न अदा हो, मगर इन

अंतिम भीतरी आवरण पर जारी-

अक्षर

विचारशीलता और बौद्धिक हस्तक्षेप का उपक्रम

सम्पादक
प्रियंवद

उप सम्पादक
जीवेश प्रभाकर

वर्ष : 26 - अंक : 74
अगस्त -2026

यह अंक
https://notnul.com
पर उपलब्ध है ।

अकार की सदस्यता संबंधी जानकारी-

एक प्रति	- 100 /- रु.
वार्षिक सदस्यता (तीन अंक)	- 500/- रु.
संस्थागत वार्षिक सदस्यता (तीन अंक)	- 800/- रु.
तीन वर्ष की सदस्यता (व्यक्तिगत)	- 1200/- रु.
तीन वर्ष की सदस्यता (संस्थागत)	- 1800/- रु.
आजीवन सदस्यता (व्यक्तिगत)	- 3500/- रु.
संस्थागत आजीवन सदस्यता	- 5000/- रु.

(पत्रिका के समस्त सदस्यता शुल्क में रजिस्टर्ड डाक खर्च सम्मिलित है।)

आप 'अकार' के लिये धन राशि अपने क्षेत्र के 'बैंक ऑफ बड़ौदा' की किसी भी ब्रांच में जमा करा सकते हैं। 'अकार' के खाते के ब्यौरे नीचे दिए जा रहे हैं। आप मनीष के मोबा. न. 9935058400 पर भी राशि भेज सकते हैं ।

Name of the Firm which Holds the bank Account :- AKAR PRAKASHAN
Bank Name :- Bank of Baroda, Bank Adress :- Panki, Site - 1, Kanpur - 208002.,
Bank Account No.- 09620200000089 MICR Code :- 208012012
IFSC Code :- BARB0PANKIX (0 is ZERO, NOT ALPHABETICAL O)

प्रकाशक : अकार प्रकाशन, B -204, रतन सैफ़ायर,16/70,सिविल लाइन्स कानपुर - 208001

सम्पर्क :
प्रियंवद
B -204, रतन सैफ़ायर,,16/70, सिविल लाइन्स कानपुर - 208001
ई मेल - priyamvadd@gmail.com (मो.) 9839215236

जीवेश प्रभाकर :
69/2113, रोहिणीपुरम -2, रायपुर-492001 (छ.ग.)
ई मेल - jeeveshprabhakar@gmail.com मो. - 09425506574

आवरण :- जीवेश प्रभाकर
मुद्रक
सांखला प्रिंटर्स, विनायक शिखर, बीकानेर - 334003, फोनः - 0151-2242023
कम्पोज़िंग
विकल्प विमर्श, 87 निगम कॉलोनी, रायपुर - 492 001

सम्पादन व संचालन अवैतनिक । समस्त विवाद कानपुर न्याय क्षेत्र के अन्तर्गत होंगे । पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के विचार सम्बन्धित लेखक के अपने हैं । सम्पादक अथवा प्रकाशक का उससे सहमत होना अनिवार्य नहीं है ।

अनुक्रम

1. **अकथ :** जहाँगीर के एक दिन के बहाने - *प्रियंवद* 06

2. **स्मृति आलेख :** आँधी की हथेली पर का चिराग़ :चंद्रकांत देवताले - *सेवाराम त्रिपाठी* 17

3. **आत्माभिव्यक्ति :** जहाँ थोड़ा-सा सूर्योदय होगा- *चंद्रकांत देवताले*.....28
('चंद्रकांत देवताले की चयनित कविताएं' की भूमिका)

4. **लेख :** मंज़र अली सोख़्ता की विस्मृत क्रांति-कथा - *सुधीर विद्यार्थी*..... 34

5. **लेख :** मनीषियों के उत्तराधिकारी-नई सोच के युवा फिल्मकार स्मृतियों में सिनेमा-10 (समापन क़िस्त) - *जितेन्द्र भाटिया* 48

6. **लेख :** आदिवासी अस्मिता; युद्ध के विरुद्ध युद्ध - *हरि राम मीणा* 67

7. **लेख :** दास्ताने तराना-ए-हिन्दी : *शीन क़ाफ़ निज़ाम* 87

8. **कहानी** : फ्री बर्ड्स : *जीवेश प्रभाकर* 94

9. **कविता :** कविताएँ - *विनय सौरभ* 100

10. **पत्र :** ये निशातो ग़म की बहस भी क्या (तीन पत्र) - प्रस्तुति : *प्रियंवद* 109

11. **ज़िन्दगीनामा :** सूफ़ी शायर : अवध बिहारी सिंह 'बेदिल' - *वीरेन नंदा* 119

12. **प्रसंग/अप्रसंग** : एक कौतुक 128

13. **रपट** - मेरी रचनात्मकता : मेरे द्वंद्व ('संगमन'-26) - *कमलेश भट्ट* 132

जहाँगीर के एक दिन के बहाने

राजाओं की ज़िन्दगी के बारे में जानने की उत्सुकता और दिलचस्पी लोगों में हमेशा से रही है। सैकड़ों सदियों से, सर्दियों की रातों में आग के पास बैठकर गाँव की चौपालों या घरों में नानी-दादी की कहानियाँ अक्सर इसी तरह शुरू होती थीं, 'एक था राजा' या 'एक थी रानी'। इन कहानियों में किसी राजा की ज़िन्दगी के इर्द गिर्द कई घटनाएं बुनी होती थीं। कभी उसकी क्रूरता की, कभी दया की। ये घटनाएँ अपनी अविश्वसनीयता और कल्पनाशीलता की उड़ानों के कारण रोचक कहानी बन जाती थीं । यह सच जानते हुए भी, कि ऐसा नहीं होता जैसा कहा जा रहा है, फिर भी सुनने वाले हुंकारा भरते । बीच-बीच में 'हूँ'-'हूँ' करते हुए, किस्सागो को आगे सुनाने के लिये उत्साहित और प्रेरित करते थे ।

अक्षर 74

किस्सा 'अलिफ़ लैला' से 'सिंहासन बत्तीसी' या 'विक्रम-बेताल' से लेकर 'रामायण', 'महाभारत' 'कथा सरित्सागर' या 'दशकुमारचरित' तक, राजाओं की ही कहानियाँ हैं। कालिदास और शेक्सपीयर के नाटकों से, मिथकों के नायकों तक राजा ही कथा के केन्द्र में होता था। उसी तरह, जिस तरह, पिरामिड, कोलोज़ियम, पार्थिनन या ताजमहल की बुनियादों में था । हमारे जीवन में था । हमारे समाज, धर्म, राज्य, युद्धों, घृणा, हमारे दुखों के कारणों और हम पर किए गए अत्याचारों में था। इसीलिए शायद लोगों में राजा के बारे में सब कुछ जानने की इच्छा होती थी, क्योंकि उनके लिए वह बहुत दूर की चीज़ होता था, उसी तरह, जिस तरह अपनी दुनिया के देवता या किसी दूर देश के लोग, उनकी बातें होती थीं। वे जानने चाहते थे कि जो उनके लिए अदृश्य, अप्राप्य है, वह राजा कैसा होता है? कैसा दिखता है, दिन भर क्या करता है, उसके मन में क्या चलता रहता है, कैसे वह राज चलाता है, कैसे दिन बिताता है, कैसे प्रेम, नफ़रत, युद्ध, घृणा करता है? उसके राज्य में लोग कैसे रहते थे, उसकी अपनी ज़िंदगी कैसी थी? ऐसे कई सवालों के उत्तर वह राजाओं की